"कमलेश्वर की कहानियों में चित्रित मध्यमवर्गीय संवेदना – एक अध्ययन"

माधुरी राजाराम चव्हाण
शोधार्थी, हिंदी भाषा विभाग
शिवाजी विश्वविद्यालय कोल्हापुर, (महाराष्ट्र)
दूरभाष क्र– 7972342621
Email ID – madhurishinde90823@gmail.com

शोध सारांश –

कमलेश्वर स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी के प्रमुख एवं प्रसिद्ध साहित्यकार हैं। 'नई कहानी' के निर्माता कमलेश्वर का कहानी लेखन सन् 1951 इ. से प्रारंभ होता है। कमलेश्वर एक प्रतिभासंपन्न साहित्यकार, उत्तम आलोचक, संपादक, संवाददाता, वक्ता सशक्त लेखक थे। कमलेश्वर ने लगभग सभी विधाओं में अपना लेखन कार्य बड़ी सजगता से किया है। कहानी, उपन्यास, नाटक, संस्मरण, समीक्षा, संवादलेखन, वैचारिक लेख इन सारी विधाओं में उनकी रचनाएँ मिलती हैं। उनके लेखन में विविधता थी, प्रतिभा थी। उनका साहित्य जीवन की वास्तविक स्थितियों से होकर गुजरता है, जिसमें यथार्थवादी दृष्टिकोण उभर आता है। उनकी कहानियाँ मध्यमवर्गीय तथा निम्न–मध्यमवर्गीय संवेदना को दर्शाती है। मध्यमवर्गीय लोगों में स्थित, रीति–रिवाज उनकी जीवन शैली, परंपराएँ, उनकी समस्याएँ त्रासदी, मजबूरी, पीड़ा, संस्कार आदि का वर्णन बडी सजगता से किया है। कमलेश्वर का साहित्य संसार बहुत विस्तृत है। उनका कहानी लेखन अद्‌भुत है, उसके साथ ही उनके उपन्यास, नाटक, संवाद, पटकथा भी बेहतरीन है।

संकेताक्षर– नई कहानी, मध्यमवर्गीय संवेदना, स्वातंत्र्योत्तर कहानी।

साहित्य के क्षेत्र में देखा जाए तो बहुत सारी विधाओं का जन्म हुआ जैसे– उपन्यास, नाटक, कहानी, संवाद, रिपोर्ताज, समीक्षा आदि। लेकिन इन सारी विधाओं में सबसे प्रिय तथा लोंगों द्वारा सराही हुई विधा अगर कोई है, तो वो है कहानी। कहानी एक एसी विधा है, जो बच्चों से लेकर बड़े– बूढ़ों तक सबको पसंद आती है। शायद इसी कारण कहानी विधा ने सबसे अधिक प्रसिद्धि पाई। कहानी में सबसे अग्रणी लेखकों के नाम देखे जाए तो सबसे पहले हमें कुछ नाम याद आते हैं, जैसे कि– कमलेश्वर, राजेंद्र यादव, मोहन राकेश, निर्मल वर्मा, अमरकांत, मन्नू भंडारी, ममता कालिया, कृष्णा सोबती आदि। स्वातंत्र्योत्तर समय के बाद नई कहानी, समांतर कहानी का जो आंदोलन चला उसके प्रमुख थे– कमलेश्वर, राजेंद्र यादव, मोहन राकेश, दुष्यंत कुमार। स्वतंत्रता के बाद कहानी बस एक मनोरंजन का साधन मात्र न रहकर जनता के दुख, दर्द, पीड़ा, समस्या, कुंठा की प्रमुख आवाज बनी। कहानी द्वारा सामाजिक संदेश का कार्य दिया जाने लगा। अब कहानियाँ काल्पनिक न होकर हमारे यथार्थ से जुड़ गई थी। समाज में घटित हो रही घटनाओं, परिस्थतियों को आधार बनाकार कहानियों की रचना होने लगी। कमलेश्वर की कहानियाँ भी यथार्थबोध से जुडी हुई थी। उनकी कहानियाँ पूँजीपति या गरीबी का दर्शन नही कराती थी, बल्कि मध्यमवर्ग तथा निम्न–मध्यमवर्ग की जीवनशैली को भी उजागर करती है। मध्यमवर्गीय जीवन को कमलेश्वर ने अपनी कहानियों में बड़े प्रभावी ढंग से उतारा है।

कमलेश्वर की लगभग सौ से भी जादा छोटी–बड़ी कहानियों ने हिंदी साहित्य जगत में अपना बड़ा योगदान दिया है। उन्होंने पहले 'नई कहानी' और उसके बाद 'समांतर कहानी' आंदोलन के माध्यम से मध्यमवर्गीय सामान्य जन का उनकी

समस्याओं का, बदलती जीवनशैली का चित्रण किया । मध्यमवर्गीय लोगों की जीवनशैली, उनके रीति–रिवाज, परंपराएँ, उनकी समस्याओं की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित किया । कमलेश्वर कि सारी कहानियों में, कस्बे तथा नगरीय, महानगरीय जीवन की गतिविधियों को सजग रूप से उतारा है । कमलेश्वर ने अपने जीवन काल में एक से बढ़कर एक अनुपम कहानियों की रचना की जिसमें प्रमुख है– राजा निरबंसिया–1957, कस्बे का आदमी–1958, खोई हुई दिशाएँ–1963, मांस का दरिया–1964, जिंदा मुर्दे–1969, कमलेश्वर की श्रेष्ठ कहानियाँ–1976, इतने अच्छे दिन–1989, कथा प्रस्थान रावल की रेल–1992, और कोहरा–1994, परिक्रमा–1996, महफिल–2000, समग्र कहानियाँ–2001 इत्यादि कहानियों का समावेश हैं । आधुनिकता की चकाचौंध में आम आदमी की पहचान जैसे खोती नजर आ रही है । महानगरों के मध्यमवर्ग का जीवन बड़ा तेज, भागदौड वाला हो गया है । घड़ी की सुई के साथ सबको भागना पड़ता है। यही कारण है कि उसे अपने बारे में सोचने–समझने का वक्त ही नहीं मिलता, कमलेश्वर ने अपनी कहानियों के माध्यम से यही दिखाने की कोशिश की है ।

'राजा निरबंसिया'–

कमलेश्वर का प्रथम कहानी संग्रह 'राजा निरबंसिया' है जिसमें 7 कहानियाँ प्रकाशित है । राजा निरबंसिया प्रस्तुत कहानी है । इस कहानी के अंतर्गत कमलेश्वर ने जगपती और चंदा के माध्यम से एक मध्यमवर्गीय अभावग्रस्त जोडे को दिखाया है, बड़े यथार्थवादी ढंग से कमलेश्वर ने इसे दो कहानियों के बीच जोड़ा है । एक है जो प्राचीन लोककथा है, तो दुसरी नई कहानी है । दोनों कहानियों के माध्यम से उन्होंने दाम्पत्य जीवन के संबंधों में परिवर्तन को, अभावग्रस्त जीवन की समस्याओं को दिखाया है । नई कहानी में जगपति जो लेखक का बचपन का दोस्त है, उसकी कहानी है । एक बार जब जगपति अपने रिश्तेदारी में किसी दयाराम की शादी में जाता है, तब वहाँ डाका पड़ता है । उसी वक्त संघर्ष में उसकी जाँघ पर गोली लग जाती है । उसे गाँव के अस्पताल में भर्ती कराया जाता है । जब जगपति को दवाइयों की जरूरत होती है, तब पैसो के अभाव के कारण उसकी पत्नी चंदा अपनी चुड़ियाँ देकर इलाज का इंतजाम करने की कोशिश करती है । अस्पताल का लाजमी खर्च उठाने की भी परिस्थिती इन दोनों की नही है, इस कहानी द्वारा, कमलेश्वर ने निम्न मध्यमवर्गीय, अभावग्रस्त जीवन पद्धति की ओर ध्यान आकृष्ठ किया है । अपने परिवार पर आई मुसीबतों का हल स्वरूप घर की गृहिणी को अपने जेवरों को भी दाँव पर लगाने की नौबत आती है । अभावग्रस्त जीवन में अपनी छोटी–छोटी इच्छाओं को भी मारना पड़ता है ।

'बयान'–

कमलेश्वर की 'बयान' एक 38 वर्षीय महिला की कहानी है, जिसको उसके पति की ही, आत्महत्या के लिए जिम्मेदार ठहराकर कटघरे में खड़ा किया जाता है । उसका पति एक इमानदार फोटोग्राफर था, जो राजनेताओं के दावपेचों में फसकर खुद को खत्म कर लेता है । रेगिस्तान में की गई विकास योजना के अंतर्गत पेड लगाए जाने कि बात एक नेता करता है । जिसके विरोध में विरोधी दल के नेता द्वारा कुछ तस्वीर दिखाई जाती है, जिनमें न पेड थे न जंगल । यह तस्वीरे उस फोटोग्राफर द्वारा निकाली गई थी जिसके कारण उस फोटोग्राफर को ही नौकरी से निकाला दिया जाता है । उस फोटोग्राफर पर अपनी पत्नी और बेटी की जिम्मेदारी थी । चिंता और निराशा की वजह से उसकी आँखों से खून बहने लगा । जैसे–तैसे नोकरी करके उसकी पत्नी घर चला रही थी, बच्ची को संभाल रही थी । ऐसी स्थिती में निराशाग्रस्त फोटोग्राफर जीवन से हार मान कर आत्महत्या कर लेता है, और सबसे बुरी बात यह है कि उसकी आत्महत्या करने का प्रमुख कारण उसकी पत्नी को ही ठहराने की कोशिश कि जाती है । इस तरह 'बयान' कहानी में लेखक ने हर तरह से खपता हुआ, पीसता हुआ, शोषित, दबा हुआ, विवश, लाचार मध्यमवर्ग को चित्रण किया है ।

'आत्मा की आवाज'–

कमलेश्वर ने मध्यमवर्ग के दाम्पत्य जीवन का तनाव अपनी कहानी– 'आत्मा की आवाज' में दर्शाया है । इस कहानी में लेखक दो चित्र देता है । पहला गोपाल और उसकी पत्नी का और दूसरा उसकी प्रेमिका का जो किसी और से विवाहिता है । दोनों प्रसंग उनके रसोईघर के है । वे मध्यमवर्ग की नारियाँ हैं । और मध्यमवर्ग के पारीवारिक स्थिति अनुसार घर की बहू को ही खाना बनाना पड़ता है । दोनों से भी अपने–अपने ससुराल में रोटियाँ टेढ़ी बनती है, परंतु एक मार खाती है, घरवालों से पिट जाती है, तो दूसरी का लाड–प्यार होता है । उसके साथ समझदारी से व्यवहार किया जाता है । वास्तव में अपनी परिस्थतियों से जुझकर नारी का मन कहीं खो सा जाता है । वह बाहय दुनिया से कट जाती है । इसका चित्रण 'आत्मा की आवाज' में हुआ है । पैसा, सुख, सुविधाएँ देखकर, नौकरी, जमीन, घर–बार देखकर आज की नारी ब्याही जाती है, लेकिन उसके आत्मा की आवाज उसके प्रेमी से ही बँधी रहती है । दु:खद परिस्थिति में भी वह दोहरी मार सहती है । अगर प्रेमिका पत्नी न बन पाए तो पुरुष का कुछ नहीं बिगड़ता परंतु नारी की आत्मा की आवाज उसे झकझोडती रहती है । इस तरह कमलेश्वर ने मध्यमवर्ग के दाम्पत्य तणाव का दर्शन इस कहानी द्वारा किया है ।

'बेकार आदमी'–

कमलेश्वर की 'बेकार आदमी' कहानी में–मध्यमवर्गीय लोगों को अपने सपने से कैसे समझौता करना पड़ता है, यह दिखाया गया है । रोजगार देने वाले दफ्तर में रोजगार देने वाला आदमी ही अपने आप को अनुपयुक्त समझता है । यह अधिकारी अपने आपको उस दफ्तर के लिए तब असंगत समझता है, जब एक लेखक उसके सामने नौकरी के लिए आता है । वहाँ पर वह लेखक नौकरी के लिए आया है, तब उस व्याक्ति को घुटन सी होती है,क्योंकि वह अधिकारी स्वयं एक लेखक बनना चाहता था । और दूसरी तरफ वह जो लेखक है, उसे अफसर बनना है । इसका मतलब जिसे लेखक बनना था वो तो पत्रिका का संपादक, रिपोर्टर या संवाददाता ना होकर रोजगार दफ्तर में उलझा है । और बेकार युवक लेखक, रिपोर्टर होते हुए अफसर बनने आया है । कमलेश्वर ने ने इस कहानीद्वारा मध्यमवर्गीय युवाओं की नोकरी कि तलाश, टुटता सपना, अपने सपने से किया हुआ समझौता यह दिखाकर आज के युवाओं का विडंबनात्मक चित्र खींचा है ।

'एक थी विमला'–

यह कमलेश्वर की चार खंडो में विभाजीत कहानी है । कहानी का आधार मध्यमवर्ग का अभावग्रस्त जीवन झेलने वाली अविवाहित युवती के आस–पास घूमता हैं, निम्न मध्यमवर्ग की कितनी युवतियाँ अपने परिवार का बोझ ढोते–ढोते अपनी जिम्मेदारियों के बीच खो जाती है । आर्थिक समस्याओं के होते उन्हें बिन ब्याही रहकर अपना अभावपूर्ण आधा–अधूरा जीवन व्यतीत करना पड़ता है । कमलेश्वर ने इस कहानी के माध्यम से आर्थिक संकटो से गुजरने वालें लोगों की जीवन की परेशानियाँ दिखाई हैं । आर्थिक संघर्ष में जीवन व्यतीत करने वाली युवतियाँ, अपनी रोटी का जुगाड़ करने के लिए अपने विवाह की आवश्यकताओं को भी पीछे छोड़ देती हैं । मध्यमवर्गीय लोग अपने संस्कार, अपने आचार–विचारों से जुडे रहते हैं । यही मानसिकता विमला नाम की लड़की को कभी दहलीज पार करने नहीं देती । अपने जीवन के खालीपन को दूर करने करने के लिए, सुनीता का गुड़िया से खेलना उसकी मजबूरी है । कमलेश्वर ने इस कहानी द्वारा मध्यमवर्गीय जीवन जीने वाली किशोरियों कें टूटते अरमानों को चित्रित किया है ।

'दुखभरी दुनिया'–

कमलेश्वर की कहानी 'दुखभरी दुनिया' में हमारे देश के महत्वकांक्षी मध्यमवर्ग का चित्र दिखता है । बिहारी बाबू एक लाचार गरीब पिता है, जिसके सारे अरमान अपने आठ साल के बेटे दीपू पर टिके हैं । बिजली कंपनी में काम करने वाले बिहारी

बाबू को अपने अफसरों को देखकर बड़ा दुख होता है । उनकी नज़र में तो कंपनी के इंजीनियर बसे है,जो कारों में घूमते हैं । इसलिए वो भी चाहता है कि उसका बेटा बड़ा होकर इंजीनियर बने । वे नही चाहते की उनकी तरह उनके पुत्र की भी हालत ऐसी ही रहे । अपनी तरह दुख दर्द अपने बच्चे को झेलने पड़े । इसलिए उसके पढ़ाई के के लिए दफ्तर से आते ही घंटो तक माथा फोडते हैं । अपने पिता के बड़े सपने और महत्वकांक्षाओं के बीच उस छोटे बच्चे का बचपन कहीं खो जाता है । उस बच्चे का भोलापन देखकर उसके प्रति सहानुभूति के भाव प्रकट होते है । इस तरह इस कहानी द्वारा कमलेश्वर ने मध्यमवर्ग परिवार की महत्वकांक्षा के साथ घुटन और निराशा को भी चित्रित किया है ।

कमलेश्वर की बहुत सारी कहानियाँ मध्यमवर्ग की निराशा, कुंठा, आक्रोश, समस्या, विवशता को दर्शाती है । कमलेश्वर की कहानियों का सागर बड़ा है । इन सारी कहानियों के अतिरिक्त उन्होंने– मास का दरिया, दुखों कें रास्ते, उपर उठता हुआ मकान, दूसरे, जो लिखा नही जाता, कुछ नही कोई नही, भरे पूरे अधूरे, जिंदा मुर्दे, नया किसान,आसक्ती, राते इन सारी कहानियों में, मध्यमवर्ग तथा निम्न–मध्यमवर्ग का सजग चित्रण किया हैं । जीवन के हर क्षेत्र में खपता, पिसता शोषित, लाचार, विवश, दबा हुआ मध्यमवर्ग दर्शाया है । कमलेश्वर ने इन सारी कहानियों द्वारा मध्यमवर्गीय जीवन की वास्तविकता दिखाई है । कमलेश्वर की कहानियों में यथार्थवादी दृष्टिकोण दिखाई देता है । मध्यमवर्ग जीवन की त्रासदी, मानसिक पीड़ा, मनोवृत्ति, सादगी, अपनापन, भोलापन, संस्कारशीलता, विद्रुपता आदि भाव दिखाई पड़ते हैं । अपनी अलग–अलग कहानियों के माध्यम से उन्होंने मध्यमवर्गीय संवेदना, चेतना को दर्शाया है । कमलेश्वर ने अपनी कहानियों में मध्यमवर्गीय जीवन की निराशा, अस्तित्व, संघर्ष, टूटन, प्रदर्शन प्रियता,असंगति बोध, पीढियों का संघर्ष, टूटते सपने आदि को व्यक्त किया है । इस प्रकार कमलेश्वर कि कहानियों में स्वातंत्र्योत्तर भारत की मध्यमवर्गीय परिवर्तित मानसिकता का विस्तृत रूप व्यक्त हुआ है ।

संदर्भ–

1) कमलेश्वर, मेरी प्रिय कहानियाँ – पृ. 6
2) कमलेश्वर, मेरी प्रिय कहानियाँ – पृ .7
3) कमलेश्वर, मेरी प्रिय कहानियाँ – पृ. 8, 11, 12
4) कमलेश्वर, मेरी प्रिय कहानियाँ – पृ. 17, 37
5) कमलेश्वर की समग्र कहानियाँ
6) आधुनिक गदय साहित्य – पृ. 146, 162
7) मंजुला देसाई – कमलेश्वर की कहानियों का अनुशीलन, पृ. 114,117
8) मंजुला देसाई – कमलेश्वर की कहानियों का अनुशीलन, पृ. 121, 122
9) मंजुला देसाई – कमलेश्वर की कहानियों का अनुशीलन, पृ. 128,129
10) मंजुला देसाई – कमलेश्वर की कहानियों का अनुशीलन, पृ.130, 133
11) मंजुला देसाई – कमलेश्वर की कहानियों का अनुशीलन, पृ.179